Date:- 28/5/2020	Degree Part-II (Hons.)
Content Writer:-	Paper - II
Dr. Akshay Kumar Pathak	Content of Paper:-
Deptt. of Economics,	Indian Economy
Marwari College,	Module:- 4
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC:- REMEDIES FOR REMOVAL OF INDUSTRIAL BACKWARDNESS IN INDIA
(भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन दूर करने के उपाय)

भारत में औद्योगिक क्षेत्र का पिछड़ापन कतिपय कारणों से विद्यमान है। अतः इस पिछड़ेपन को दूर करने हेतु निम्नांकित सुझाव दिए जा सकते हैं :-

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का व्यापारिक आधार पर विकास :- भारत में औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए सुझाव दिया जाता है कि सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना की जाए। भारत द्वारा पूर्व के योजना काल से ही इस नीति को अपनाया गया है जिसके अंतर्गत वर्तमान में लगभग 12 लाख करोड़ रुपये केन्द्र सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र में लगा रखी है। लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र के इन उद्योगों की क्षमता निम्न स्तर की है। इनको व्यापारिक दृष्टिकोण से सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

(ii) निजी क्षेत्र को सुविधाएँ :- भारत में सरकार द्वारा निजी क्षेत्र को पर्याप्त सुविधाएँ दी जानी चाहिए जिससे कि निजी क्षेत्र के उद्योगपति नए-नए उद्योगों की स्थापना एवं पुराने उद्योग के विकास की ओर अग्रसर हों।

(iii) विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन :- भारत जैसे विकासशील देश में पूंजी का हमेशा अभाव रहता है। अतः विदेशी पूंजी को निश्चित

Scanned with CamScanner

अनुकूल शर्तों पर देश में प्रोत्साहित की जानी चाहिए। इससे औद्योगिक विकास को बल मिलेगा।

(iv) पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन :- औद्योगिकरण को बढ़ावा देने हेतु अधिकाधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। अतः अर्थव्यवस्था में छूट प्रदान की जानी चाहिए जिससे पूँजी निर्माण को बल मिल सके। सरकार द्वारा इस हेतु सरलीकृत कर प्रणाली लागू की जानी चाहिए।

(v) ऊर्जा के साधनों का समुचित विकास :- औद्योगिकरण को बढ़ावा देने हेतु एक अनिवार्य शर्त यह है कि ऊर्जा के विभिन्न साधन उन्नत अवस्था में हो। भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था में ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों के दोहन हेतु आवश्यक कदम उठाए जाने की आवश्यकता है ताकि औद्योगिकरण के पिछड़ेपन को दूर किया जा सके।

(vi) आधुनिक मशीनों का आयात :- भारत जैसे देश में आधुनिक मशीनों का निर्माण नहीं होता है अतः आवश्यकता इस बात की है कि विदेशों से आधुनिक मशीनों का आयात किया जाए ताकि औद्योगिकरण को उन्नत किया जा सके।

Scanned with CamScanner

(VII) कृषि उद्योगों का विकास :-

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस अर्थव्यवस्था में औद्योगिकरण को विकसित करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषि आधारित उद्योगों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाए। इस उपाय द्वारा कृषि एवं उद्योग दोनों ही क्षेत्रों का साथ-साथ विकास किया जा सके।

(VIII) प्राकृतिक साधनों का समुचित विदोहन :-

भारत में प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता है, अतः औद्योगिक विकास हेतु इन साधनों का समुचित विदोहन आवश्यक है।

जुलाई 1991 में भारत के औद्योगिक नीति में संशोधन किए गए तथा उदारवादी औद्योगिक नीति अपनाए गए। इस नीति के अंतर्गत निम्नांकित प्रावधान किए गए :-

(a) कुछ उद्योगों को छोड़कर शेष सभी उद्योगों के लिए लाइसेन्स प्रणाली समाप्त किया गया।

(b) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों की कार्यकुशलता बढ़ाने का प्रयास किया गया।

(c) विदेशी पूँजी को बढ़ावा दिया गया।

(d) उद्योगों को अपनी अधिकृत साधन स्थापित करने की अनुमति दी गयी।

(e) विदेशी प्रौद्योगिकी मशीन एवं यंत्रों के आयात की अनुमति दी गयी।

Scanned with CamScanner

उपरोक्त सभी प्रयत्नों से औद्योगिकरण को बढ़ावा मिला है तथा भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व के एक सबल अर्थव्यवस्था के रूप में आयी है।

हाल के दिनों में भारत सरकार द्वारा औद्योगिकरण को बढ़ावा देने हेतु कुछ नवीनतम उपायों को भी लागू करने का प्रयास किया गया है। इन नवीनतम उपायों में मुख्य रूप से मेक इन इंडिया कार्यक्रम, स्टैण्ड अप इंडिया स्कीम, मुद्रा स्कीम, ई-बिज परियोजना, कौशल विकास कार्यक्रम आदि है। इन सारे उपायों को लागू करने का उद्देश्य औद्योगिकरण को बढ़ावा देना ही है। वर्तमान समय में कोविड-19 रूपी महामारी के प्रभाव से अर्थव्यवस्था को सुरक्षित करने हेतु भी औद्योगिकरण को मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है। इस दिशा में भारत सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उद्योगों के विकास हेतु लगभग 20 लाख करोड़ के पैकेज का एलान भी किया गया है। इस पैकेज द्वारा अर्थव्यवस्था के छोटे छोटे एवं मंझोले उद्योगों को फिर से पटरी पर लाया जा सकेगा।